हरभगवान चावला

ई-मेल-hbchawla1958@gmail.com

चाय

वे दोनों एक चाय की गुमटी पर रुके। वहाँ एक बच्चा मौजूद था।

"कहाँ हैं तुम्हारे पापा, मम्मी या कोई और जो दुकान सँभालता हो?"

"पापा गाँव में दूध लेने गए हैं, दुकान में थोड़ा-सा ही दूध बचा है न!"

"ओह, तो फिर चाय कहीं और पीनी पड़ेगी। हम तो चाय के लिए रुके थे, पर यहाँ तो कोई है नहीं।"

"मैं बनाता हूँ न चाय।"

"तुम बना लोगे?"

"जी, बना लूँगा।"

"तो ठीक है, दो चाय बना दो।"

बच्चे ने कई बार अपने पिता को चाय बनाते देखा था। पानी, चाय-पत्ती, चीनी और दूध डालकर उबालना ही तो है, बस! उसने चाय बनाई और दो गिलासों में डालकर उन्हें पकड़ा दी। महिला ने चाय का एक घूँट भरा और तुरन्त ही बाहर थूककर खाँसती हुई बोली, "यह चाय है?"

पुरुष ने कहा, "अच्छी तो है, तुम्हारे मुँह का स्वाद ठीक नहीं हुआ है। शायद बुख़ार का असर अभी बाक़ी है।"

महिला कुछ बोलते-बोलते रुक गई। चाय पीने के बाद पुरुष ने उस बच्चे को बीस रुपए पकड़ाए और वे दोनों मोटरसाइकिल पर सवार होकर आगे बढ़ गए। रास्ते में महिला ने कहा, "कितनी ख़राब चाय थी, एक चाय में तीन चाय जितना मीठा था और चाय-पत्ती बस नाम की। चाय उबली भी ढंग से नहीं थी।"

"मुझे पता है, चाय अच्छी नहीं थी। शायद बच्चे ने पहली बार बनाई थी।"

"मुझसे एक घूँट नहीं पी गई और तुम सारी पी गए1 और मेरी उँगली दबाकर कुछ बोलने से भी रोक दिया।"

"तुमने उस बच्चे को देखा था न, कितना प्यारा बच्चा था! ज़्यादा से ज़्यादा छः साल का रहा होगा। मेरी कल्पना में वह संभावित पल घूम रहा था कि—उसका पिता दूध लेकर लौटा है और वह गर्व से पिता की हथेली पर वही बीस का नोट रख रहा है जो उसने कमाया है। उसका चेहरा ख़ुशी से दमक रहा है। मैं चाय को बेकार कहकर उस संभावित ख़ूबसूरत पल के तिलिस्म को तोड़ना नहीं चाहता था।"

महिला क्षण भर की ख़ामोशी के बाद बोली, "सचमुच तुम ऐसा करते तो वह पल ही नहीं, अपने बूते कुछ कर सकने का उसका हौसला भी टूट जाता।"

तभी उस मोटरसाइकिल पर भी एक ख़ूबसूरत पल सृजित हुआ। महिला ने पुरुष की पीठ पर अपना चेहरा टिका दिया था। पुरुष की पीठ पर हरसिंगार के फूल झड़ रहे थे।

हरभगवान चावला

दर्द

रोज़गार के लिए परदेस गया बेटा सात साल बाद गाँव लौटा। माँ ने उसे गले लगाया, कुछ देर रोई और फिर बेटे की पसंद का खाना बनाने में जुट गई। खाना खाने के बाद बेटे ने कहा, "आज कितने अरसे बाद सचमुच खाना खाया है। तुम्हें मालूम है माँ, मैं हर रोज़ तुमसे बिछड़ने का दर्द झेलता हूँ।"

"और मैं हर साँस में तुम्हारे बिछड़ने का दर्द पीती हूँ।" माँ के इस कथन के साथ ही माँ-बेटा पत्थर हो गए और हवा ने अपनी गति खो दी।

ताप

लड़की के पास जूते नहीं थे और उसे अपने खेतिहर मज़दूर पिता के लिए रोटी लेकर खेत जाना था। उसने हाथ जोड़कर धरती से प्रार्थना की, "मेरे पैर जल रहे हैं माँ, अपना ताप कुछ कम करो।"

उसने जवाब में धरती की कराह सुनी। कराहती धरती कह रही थी, "मेरा बस चलता तो मैं ऐसा ज़रूर करती मेरी प्यारी बच्ची! मेरे सीने पर बहती नदियाँ सूख रही हैं और पेड़ विरल हो गए हैं, मेरे पेट में भी ज़्यादा पानी नहीं बचा है। मैं अपना ताप कहाँ रखूँ मेरी बच्ची? मैं स्वयं ताप से छटपटा रही हूँ।"

लड़की की आँखों से आँसू निकलकर धरती पर गिरे। लड़की खेत की ओर चल दी। वह रोज़ ऐसे ही खेत जाती रही।

उस दिन बारिश हुई थी। वह घर से निकली तो धरती की आवाज़ सुनाई दी, "आज मैं बहुत खुश हूँ मेरी बच्ची! देखो, आज तुम्हारे पैर नहीं जल रहे होंगे।"

लड़की ने अपने पैरों की तरफ़ देखा तो हैरान रह गई। उसके पैर काठ के थे। पैर कब काठ में बदले, उसे पता नहीं था।